

संस्तुतमूढानवलित् (धाय) ॥ क्रीं श्री क्रीं कः ॥ जलस्य रुध
 ॥ ॥ तता न्यास लिका य ॥ वलि स ल ख क उ नू त य ॥
 धन धर्म आ व म यो य ॥ ॥ सा किं धो य ॥ धाल म लु ल
 (धु लो) ॥ उ क्रीं श्री द क्रि ण कालिका देव्याः ॥ महा दु र्गी वा
 र्गि य क म्मा र्ग न द व र्ग न पू ज ॥ नि मि ल्य (धन क म्मा
 पू ज ॥ र्ग पू र्णार्थं क्रीं क्रीं ह ॥ ह ॥ य ॥ अ र्घ न मः ॥ पू

४० वौ शरी या गार्घ्ये न

रुद्रासनाक्षरं श्रीं पूर्य ॥ गुरुं कृत्वा तलं खक कस्तुति
मैत्रावा यलधम्मं पूर्य ॥ १ ॥ श्रीं कृत्वा तलं खक कस्तुति
श्रीं ३ तव पाठः पाठ्यः ३ ॥ श्रीं कृत्वा तलं खक कस्तुति
सुब्रह्मन्मन्त्रादिना कंसाधीश्वरयागिनी गलमहादि
देवतानां धितं आनन्दागमयन्तवात्मकमिदं साक्षात्स्वित्त
मन्त्रं पाठ्यं तस्य धर्मं समस्तजगतां तोष्याय वंद्यामहे ॥ १ ॥ सुधा
न्मायकलाकपालकलितं कोटुहलं धालितं ब्रह्मापहृमहत्

किं न वगलेः वृक्षादिभिः सविता श्वानं वगलेः सूनेः कृष्ण
मितं माकाधिभिः सविता वत्सं वाकुमहं द्वितीयं मधूनां तदेक
संवर्द्धनं ॥ २ ॥ इति सुविना वदं कथितं मावापुम्यं वादिनां
किं विश्वं बलं कर्पकजहमा सुप्रथमा सादिता आवाग्मादिनां
धिता किक कलात्मा स न संयादिनां वदं पाठ्यं महत् तृतीयं मधूनां
देकं संवर्द्धनं ॥ ३ ॥ इति सुविना वदं हविह वृक्षादिभिः स
विता मन्त्रां धूतं धर्मं कर्म सुखं देकावा सुतिकात्मा वदं वा मन्त्रां

इविमिह कालिक कलाया लोतिभा मा नालि वन्दया उमहं व
 दुर्धम धूना नन्दै कत नन्दन ॥ ४ ॥ श्रीमन्मन्त्र लया रसवितन
 सन्मृत्पूज्यं जयत काभा कृष्णत गाऊ वम्भ सनसै दिद्यानना
 नावित ॥ ५ ॥ किं कुति जवप्रयं वमृदिनं सखी गाम्भवं ॥ ५ ॥ किं
 रुवम कुवाऊ नहि तं धारं रुजयं वम ॥ ५ ॥ आकाशा दिवि
 लोति पंचवदनं तत्वात्मकं सूदनं बहु वंद सखा वला विमृदि
 करं ३

तंशा तल्लयलु अर्चि ॥ मूर्तिं वृक्ष मयं प्रसन्न वदनं शाकि सयं रु
 द्रवं रुवी लवर्गुमयं वविद्रुज गतां यवंधा गिता ॥ ६ ॥ सत्कला
 र्थकता कतं कलि सल कालं मरुवा विधं रुकिं मूर्तिं प्रसन्नम
 किं निवय ४ सखाति कं संप्रिज ॥ वरुं धाऊ हा हा दहा करं हान
 पुदं सध्वदं धाऊं ता न मयं वविद्रुज गतां वधं यवंधा गिता ॥
 ७ ॥ अलिपिलि तयूनं श्री राग पूजा पना हं वरु विध कलमा

ॐ
नानिहसलाविमोहं। पशुजनविमूखाहं। रवीसंघिताहं।
गुनूतनक्षयमाहं। रवीमाहं। विमोहं॥ ८ ॥ सवतिन्दकर्वसदाति
वयदंसर्वार्थसम्यग्दे। साक्षात्कार्यकर्तृसमस्तसुखदेवाज्ञातवि
धेसतं। आपूकाति॥ यत्प्राविबुद्धतसंसारमाहृदिदंयात्र
कदासकवनवमं। अष्टप्रवृत्तैकजंत॥ २ ॥ त्रितीयाद
किमकालिकातवयाश्रुव॥ ७ ॥ ७ ॥

कर्वे ३

जयति काता हा कशु॥ १ ॥ जयति दया हनपादपंकजं प्र
सन्नवामासासुतमासुतमाकदायकं। अतस्तसिद्धाकसि
द्धास्तसतिप्रवाधकं नमामि या ह्यसकथा निती गलीया
निती अकुसुमध्वं माहमगुलवद्वितं। नमामि निवसा
र्थं रवी रवी रवी प्रियं॥ २ ॥ आपदाइतितांशानासमया
यावलेयनात्। सर्वालिमयया हुरुदिद्ययकस्यमलता

नृ॥ ३॥ संपूज्यमानो प्रतियालोकानो सामान्यतत्त्वस्तथा
 धतानो॥ दलस्य माकुल्य कूलस्य माकुल्यः कनकुला किं
 नवान् कूलैः॥ ४॥ यातामाहा प्रलावत सुहृत्तुव
 नृयं नमस्तुत्या समस्तुत्या यागित्या निवस्तुव॥ ५॥
 नृकुलसाधकूलान्यतिमादितिक्षी लार्थितु समग्रदि
 विभाजितानो॥ साधकूवी कुवार्तिकायि सताय वस्तुय
 क२ म

साधुनाथ्यवर्णकजमवदव॥ ६॥ यदि यकुमदूष
 काः समयाविनामावर्णकाः तदुभा दूषावः कूलयागिनी
 जनमतस्तुत्या॥ कूलद्वेषितः॥ वीरद्वयविनिन्दकाः कू
 लवधूवैहासकाः पूजनेद्राहाधीनधियः परतुतदूष
 यद्यागिनीमलुल॥ ७॥ हवन्वावदूकाः सवन्मगमल
 ४धुताः पिण्णवाः यहाः वेतालावगयकलुतवितवः क

जाधिया मा कसा ॥ भजे लाक गता थुं रुं दू प्राये मरुताम
कुंजैः सुत्वा या कुमहा स्वधा विरयथा सा सात वा नादि
लि ॥ ८ ॥ स्वर्नया निन सातल जलति । धी का वद्वि
कृत्तिता सुका ॥ सुल गता थुं यी ० जतिता ॥ स्वक कजा म
कुजाः ॥ धा गलः ॥ सहजा थुं वधु कतिताः ॥ स्वक कजा सुकु
जाः ॥ धी को लि का म कुजा धा गितः ॥ वल ला स या त मूदि

तासा सर्वदा या कुव ॥ ९ ॥ दान दान लः ॥ सह ग क या दि
तिल या ॥ धी न ल न का त न गृत्वा गत व विहा भ क द व म
धा नाम ल गत न सिताः ॥ कृष्ण लान गता थुं वधु थ गता ॥ स
का रु स ल गत थ व का ना द त रु तु मा सु क म गृ द्द कु थुं
न ॥ ॥ न द कु सा ध का सि दान द कु कुल की ल का ॥
न द कु ग कि मा र्ग ल न द कु कुल या गित ॥ न द कु कुल या

८९

५१५

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ



ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री उदयिका कालिका

जे नमः ॥ ॥ पंचानन स्नात ॥ पंचामृत यज्ञ सं

२

व वक्रादि वासित ॥ पंचदिवा समा पूकं पंचामृत
स्नापयामहे ॥ ॥ जल स्नात ॥ पुका वायु वा जं लादि
श्री खलुतिक ॥ श्री खलु वदनै दिव्यं गी धाये सुमता
हने ॥ जल स्नात तस्य चंदनै प्रतिगृह्यतां ॥ ॥

सिंदूरने ॥ वीर श्वनी महावीर वीर लस विरुषिरी ॥
लाक्षा कर्बलाद्वी सिंदूर ना वृक्ष मूल स ॥ ॥ दक्षित
अ ॥ दक्षिणें तं प्रमं च व ॥ लाक्षा मूल इत्येतां श्री गाय
वक्र वृष्य च दहि मं कय या सदा ॥ ॥ जला पवीत ॥
यज्ञा पवीतं य वमं पविर्णं पुजा पतिर्यत्न हरे पूव
स्तात् ॥ जल मूषा मूयं प्रथमं च गुणं यज्ञा पवीतं यत्र

मस्तु गजः ॥ ॥ कर्तुं यत्ताका न यः ॥ कर्तुं यत्ताका
काश्च दक्षिणायनस्य प्रियं ॥ सुष्ठु शोभाय मोक्षे वस्तु यत्ता
वनस्य यत्ता ॥ ॥ यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता
यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता
तिष्ठति ॥ ॥ तत्ता माला यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता
भाति माला यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता

पूजाया ह नमस्तुते ॥ ॥ अहं वा नमस्तुते ॥ आ नमस्तुते
विजिज्ञाति सिद्धिं वा नमस्तुते ॥ ॥ अहं वा नमस्तुते ॥ आ नमस्तुते
तं एव वस्तु यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता
यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता यत्ता
॥ ॥ अहं वा नमस्तुते ॥ आ नमस्तुते ॥ आ नमस्तुते ॥ आ नमस्तुते
वा नमस्तुते ॥ अहं वा नमस्तुते ॥ आ नमस्तुते ॥ आ नमस्तुते ॥ आ नमस्तुते

उई मूल मधसाखा मात्माने ध्यात्वा ॥ श्रीगुरुव न
मः ॥ श्रीगोलाभाय नमः ॥ श्रीदक्षिण काली नमः ॥
तमा प्राप्ता आमा ॥ य १४ सा इकाय ॥ न ३४ सा कन ॥
ल ३२ सा पिकाय ॥ व १३ अमलिका गलावनायाय
तमः ॥ अविष्कृतः ॥ अमलाय दक्षिण मूळ पुष्प मकु
ल ॥ न वक्ष विन नूळ पुष्प दक्षिण कालिका देवता

की वीजं दूषादि विनि नूळ सवस्वती कवित्वा (थ) विनि
भागः ॥ अथ अविन्यासः ॥ न वक्ष मय भनमः ॥ मान
सधिया ॥ अ नूळ पुष्प सनमः ॥ नू ३२ दक्षिण कालि
का देवताय नमः ॥ ददय स ॥ की वीजाय नमः ॥ क ० स
दूषा कय नमः ॥ अनि नूळ सवस्वती कवित्वा (थ) वि
निधाय नमः ॥ सर्वादि ॥ अति अविन्यासः ॥ तमा

मूलं नामः॥ कः॥ अ॥ क॥ य॥ रु॥ टा॥ क॥ न॥ (॥ ध॥ ने॥ तु॥ का॥ र्ज॥
तु॥ हा॥ र्ज॥ न॥ मः॥ की॥ त॥ ऊ॥ नी॥ र्ज॥ न॥ मः॥ कू॥ म॥ ध॥ मा॥ र्ज॥
न॥ मः॥ कु॥ अ॥ ना॥ मि॥ का॥ र्ज॥ न॥ मः॥ की॥ क॥ नि॥ हा॥ र्ज॥ न॥ मः॥
कः॥ क॥ व॥ त॥ ल॥ वृ॥ वा॥ र्ज॥ न॥ मः॥ ॥ अ॥ न॥ न्या॥ मः॥ तु॥ का॥
रु॥ द॥ या॥ य॥ न॥ मः॥ की॥ मि॥ व॥ स॥ खा॥ हा॥ कू॥ नि॥ खा॥ ये॥ वा॥ म॥
के॥ क॥ व॥ वा॥ य॥ दू॥ की॥ न॥ य॥ य॥ या॥ य॥ व॥ घ॥ टू॥ कः॥ अ॥ र्ज॥

य॥ रु॥ टा॥ ॐ॥ ति॥ क॥ ना॥ ग॥ ना॥ मः॥ ॥ अ॥ थ॥ मा॥ रु॥ का॥ ना॥
मः॥ अ॥ अ॥ ॐ॥ ॐ॥ उ॥ तु॥ अ॥ म॥ ॐ॥ प्र॥ व॥ न॥ मः॥ रु॥ द॥ य॥ स॥
ज॥ ओ॥ अ॥ अ॥ क॥ ख॥ ग॥ घ॥ ङ॥ च॥ न॥ मः॥ ऊ॥ आ॥ ला॥ हा॥ त॥ स॥
ऊ॥ अ॥ म॥ व॥ र॥ ॐ॥ उ॥ रु॥ वा॥ त॥ न॥ मः॥ ख॥ उ॥ ला॥ हा॥ त॥ स॥
थ॥ द॥ ध॥ न॥ य॥ रु॥ व॥ म॥ य॥ न॥ मः॥ ऊ॥ आ॥ ला॥ के॥ ता॥ न॥ व॥
ल॥ व॥ ग॥ व॥ स॥ रु॥ ल॥ कः॥ न॥ मः॥ ख॥ उ॥ ला॥ के॥ ता॥ न॥ ॐ॥

मिनाहकात्यासः॥ ततो नृलमंशं लक्षा १० वन
पाञ्च नंवा लाहाति नं मालंति स वा ६ लं स दानि
धियं॥ ॐ तित्यासः॥ जलपाय प्रकृतं जल
पालयाशासनाय नमः॥ नमूनि मधुलाय नमः॥
रुसूर्य मधुलाय नमः॥ लेखयत न ग न च य नूत
येव ग दावली स न सती॥ नर्मद सिंधु कावरी जलं

मिनी विधिं कुरु॥ श्री व नूला जलाय नमः॥ क (ग)
ननं॥ सीता म मधुलाय नमः॥ को को को दू दू को को
लाहा श्री जलपाय एहा न काय पापू॥ प्रिधा॥ का व
दयाय नमः॥ को मि न स स्वाहा॥ कु नि स्वाय वी घट
को क व वा य दू॥ को न प्र तु या य वी घट॥ कः अ काय
रुद्र॥ आ वा ह न तु य न य व ना क त पू र्ण नमः॥

धेनु मूडी दर्शयत ॥ अर्घा पूजते नृसमं प्रसा
 दिधा पूजा ॥ कर्त्तुं नेतु पूजार्जं याति मूडा कृतं ॥
 कीदृशित कालिका विग्रहं मम वासिनी धीम
 हं तत्ता ध्याय प्रसादयात् ॥ देदी आदित स कर्त्ति
 हाय ॥ ॥ तता अर्घपात्र पूजते अर्घपात्रा सनाय
 तमः ॥ गान्ती रूपा धर्मपद देव धर्म कला समं अ
 र्घ

र्घपात्रा सनाय तमः ॥ अर्घपात्रा सन पूजा ॥ वात
 प्रकालने ॥ रुद्र ॥ ॥ श्रुयते हा हा रूपा वसुपदव
 दम कला समं पात्राय यापू ॥ ॥ इयं शुद्धि
 या नाला वा आ मू अमृती कल्प ॥ धेनु मूडी दर्श
 यत ॥ अर्घपात्र सधन ॥ प्रकालु खलु सै रूपा ससव
 न स मावह ॥ आपू तिन म हा पात्रं वी पूर्व वा घमान

ध्याय पूजा ॥ अथ हस्तमुद्रा ॥ याऽनिश पू० ता
पृथिवी त्वा म ॥ म ॥ पूतिनिश ॥ म ॥ म ॥ म ॥ म ॥ म ॥
लहान ॥ व ॥ म ॥ निश ॥ द ॥ य ॥ ता ॥ म ॥ ज ॥ ह ॥ न ॥ ७ ॥ व ॥
द ॥ द ॥ ज ॥ निश ॥ क ॥ म ॥ वा ॥ म ॥ ह ॥ न ॥ म ॥ य ॥ ॥ क ॥ थ ॥ नि
श ॥ क ॥ या ॥ ल ॥ ता ॥ आ ॥ का ॥ म ॥ ह ॥ न ॥ ० ॥ ह ॥ ॥ मूल ॥ म ॥ य ॥ य ॥ ०
॥ आ ॥ म ॥ ते ॥ वा ॥ य ॥ क ॥ द ॥ ते ॥ ० ॥ ति ॥ ह ॥ न ॥ मु ॥ द ॥ दि ॥ ० ॥ ७ ॥

त ॥ मा ॥ र्ज ॥ त ॥ म ॥ पू ॥ ज ॥ न ॥ ॥ का ॥ व ॥ न ॥ द ॥ न ॥ म ॥ ॥ श्री ॥ अ ॥ क ॥ र्त्त ॥ न ॥ म ॥ ॥ क ॥
व ॥ र ॥ त ॥ न ॥ म ॥ ॥ क ॥ स ॥ र्ज ॥ न ॥ मा ॥ ह ॥ नी ॥ न ॥ म ॥ ॥ श्री ॥ ता ॥ ता ॥ क ॥
अ ॥ ल ॥ का ॥ ल ॥ पू ॥ र्ण ॥ न ॥ म ॥ ॥ ॥ क ॥ ॥ क ॥ सो ॥ या ॥ इ ॥ का ॥ ॥ ३ ॥ ॥ क ॥ ति
अ ॥ ल ॥ पू ॥ जा ॥ ॥ ॥ मा ॥ लि ॥ ति ॥ य ॥ ० ॥ ॥ य ॥ व ॥ व ॥ लि ॥ वि ॥ थ ॥ ॥
न ॥ म ॥ वा ॥ स ॥ ना ॥ य ॥ या ॥ इ ॥ का ॥ व ॥ ॥ ज ॥ श्री ॥ की ॥ क ॥ ल ॥ पू ॥ र्ण ॥ व ॥
क ॥ ना ॥ थ ॥ य ॥ या ॥ व ॥ ॥ व ॥ लि ॥ ॥ ज ॥ न ॥ वा ॥ स ॥ ना ॥ य ॥ ३ ॥ थ ॥ व ॥

नामा कववा नवे शुभे (प्रोथं क द्वा द्वे य द्दम् क्रीम
हा ध्वी कृष्णाला शु य ३॥ बलि ॥ जे जग वासना
य ३॥ जे जग सर्वथा निर्या ३॥ जे जग क विन आनि
ती नो पी ० जा कृष्ण जा मो ग जा ग र्ज जा स दारु जा
कूल जा य क विन्या निती ना कृष्णी (ग वरी दि
कृष्णी मेष वरी वस वरी एका कृष्णी द्विकृष्णी त्रिक

वीच कुम्भ च घट सफा हर क नवा कवी नां विजगामि
तीती ताना बालि गृह २ मम सर्वसिद्धि कृष्ण कृष्ण ३
रुद्र साहा बलि ॥ जे जग वासना य ३॥ जे जग श्रुति
विद्या नृपुण्य वीर्य य ३॥ बलि ॥ जे जग ममा त ज नाय
३॥ जे जग ममी नृग ४ (लोपी कूल गणाय नाय ३॥ बलि
॥ जग वाक ॥ दलु नृकृती याति विंश गज मूडा ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कृया ॥ ॐ तिथ्या न पूर्व न म ॥ ॐ शं सः गंगा ये न
 म ॥ ॐ शं सः यमुना ये २॥ ॐ शं सः कावथ्य २ः ॥
 ॐ शं सः कोमिथ्य २ः ॥ ॐ नर्म काय २ः ॥ ॐ शं सः आ
 यमुखा २ः ॥ ॐ शं सः वनूलाय २ः ॥ ॐ शं सः सनख
 ये २ः ॥ ॐ शं सः सफसागनया २ः ॥ ॐ शं सः ॐ ह्यो
 दिदगलाकपालया २ः ॥ ॐ शं सः अथ ह्योमादि

अथ चिन्ता दीपानमः ॥ ॐ शं सः मान्ननिवादिमा
 दगमासादिस्थाने मः ॥ ॐ शं सः प्रतियदादिपय
 दगतिथिस्था २ः ॥ ॐ शं सः अथिन्यादिअथविभ
 गितकथस्था २ः ॥ ॐ शं सः विष्णुकादिसफाविभ
 तिथ्या ॥ ॐ शं सः ॥ ३ मूद्रकस्था २ः ॥ ३ अदि
 त्यादि नवग्रहस्था २ः ॥ ३ः बालि ह्यदि सफसा विस्था

गंगा यमुना तिथि प्रत्येक तिथि

२३॥ छंका अतस्तादि अक कनागवा ऊखा प्रमः॥
ऊं ऊं श्रीं श्रीं कूलक कमहा संभाहन सकल तीर्थ
मकु लु लु द वना कला तत्वा धियतय प्रक वि
धु नू धू धू का स द वना य आ स तत्वा धियतय
श्रीं श्रीं संपूर्ण कलम मूल ख्या पा प्र॥ विधा॥ घट
श्रीं श्रीं नै उ श सः द द यो य न मः ३॥ वलि॥

ऊं जी श्रीं ल श्रीं न मः॥ उं जी श्रीं द र्प ल य न मः॥ आ वा
क॥ ध नू मू डा॥ ॥ जा या॥ ह र स र खा हा॥ १०॥ स्तु
त॥ न ता व धी सकल तीर्थ जल न पूजा ख कृ प य त्व
व (म) लि त पूषा माला॥ य रू मू जा (न) वि व य मू लि हि
१५ स स्तु त्वा क मू लि नि व र कि य त न मा मि॥ अ ऊ
मा न स यी ३ स द द व ना या ४ नि व ना जी क रु द द भी म

हायार्चनमृत्युं कलनाचनविष्णोर्नस्तुर्वविधिबनि
पुष्टमस्तु ॥ ॥ सत्सत्पूजनं ॥ ॐ अथ ह्यमायनम
४ ॥ ॐ कावलिना जाय २४ ॥ ॐ का व्याताय २४ ॥ ॐ का
हनूमताय २४ ॥ ॐ का विही घराय २४ ॥ ॐ का कृपा
योयायि २४ ॥ ॐ का परुनामाय २४ ॥ ॐ का मार्क (पुया
य २४ ॥ ॐ का अथ ह्यमादि अह विनं जी वी त्या २४ ॥

॥ ॥ सत्सत्पूजनं ॥ ॐ अथ ह्यमादि अह विनं जी वी त्या २४ ॥
॥ कृपायनगुमा मं य मार्क (पुयनमास्तु ॥ ॥ मि व मा
जी व रु र्गी महा पा व ल्य सत्सत्पूजनं अथ अथ मं ध पूष
धूय दी प मं वं अ पूजा विधाने नस्तुर्वविधिबु नियुक्त
मस्तु ॥ ॥ मि सत्सत्पूजा ॥ ॥ अथ कृका अने ॥ न्या स
ॐ का जी ह्य प्रकृ न २ कनिष्ठ काय तप्त ४ ॥ वेद्यान २४ ॥

नतमनन २ कृतामिका यथाहा ॥ उ नृप च ८ २ य च ८ २
मध्यमा यथावत् ॥ उ कह २ व स २ ए र्ज्या य २ ॥ उ द स २
मा तय २ अंगु को अव व २ ॥ उ अ विद्या तय २ विप्रि
हू ३ रु २ अका य रु २ ॥ ॥ अंग म्मा सया थ ॥ उ अजा
हो ३ रु २ व रु २ रु दया य त म ४ ॥ उ घा न २ न व न २ शि
न स्या हा ॥ उ नृप च ८ २ मिखा य वा व २ ॥ उ कह २ व

न २ क व चा य २ ॥ उ द स २ घा तय २ नृप यथा य व व
॥ उ विद्या तय २ विप्रि २ हू ३ अका य रु २ ॥ ॥
आधन ग कि क तला स ता य था ॥ धन ॥ ला का न स ति
रा य वि वि त या न व यो व ना ॥ स्व म वि गूल व द अ दि
म नृ रु व त था ॥ ग जा य द ग न व वा र्य द कि ॥ न वि मा जि
त रु ट कं वी क र्म ॥ नृ पुर व द ग क रु या ४ ॥ नी ला

एतां कथं विन्दुवा मरुतं मूक्षविनी ॥ दिव्य वत्तं कथा
ता वा रुमा रुमा रुमा ॥ स नयमा सता सीता बरु
मश्नाम नहिता ॥ वक्ष्मा त्वा मरुता इवी वा मूक्षी दिव्य मू
यिनी ॥ तिष्ठानपूष्यं न सता ॥ दिव्य मूक्षी जिनी
पूजा ॥ वति ॥ इमा वा दिव्य मूक्षी वति ॥ पापु मति
वेकता मूक्षी ॥ वेकता मूक्षी ॥ वेकता मूक्षी ॥ वेकता मूक्षी ॥

उत्ती॥ रुयं लिखा विभं दत्ता पा इका दम्भ न खवा अय
पु कलसा ताथे कर यत्र गुम्भा विनी॥ अकृन्दं कुरु
लाहा का न निदी हं कुरु पूबिता॥ वृत्ति कुरु वृत्ती॥
॥ ॥ वृत्ता हना यथा पू॥ मिहो सना यथा पू॥ उज्ज्वला
हा वक्ति यथा सना यथा पू॥ ॥ महा यथा सना यथा पू॥
श्री महा यथा सना यथा पू॥ ॥ ध्यानं ॥ उज्ज्वला वृत्ति हं

तद्वं च वृत्ति वृत्ति लिखं॥ उक्त वृत्ति विनर्तन उजाः
सद्वं ध्या विनी॥ उक्त वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति
मं खे च वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति
गमूले च धनं रुत कया लं कं॥ वृत्ति कपाल वृत्ति
अरुथं रुयना धनं पदं न वक्ति तं जानू वा मा नूत्ता च
धनं धनं॥ उक्त वृत्ति विनर्तन उजा वृत्ति वृत्ति वृत्ति वृत्ति

आ वरदादक सिंहसं रुचदां पुही ॥ नाना रुचदां पुही ॥
श्री सर्वलोकदायकता ॥ रुचदां नंदनूपायं ऊँ ह्रीं ऊँ ह्रीं
श्री ह्रीं ॥ एवम् ॥ तावदावाह किं वसिष्ठं किं मानवा
ॐ ॥ तिष्ठानपूर्य्य नमः ॥ ॥ महाकांतया ध्याना ॥ महा
धनसमावृष्टं वक्रकर्म सुभक्तं ॥ एकाग्रं विलासने ही
नं वसुधा इति वा नृही ॥ विना कं पूल सत्कर्म महाकाय

महादयः ॥ या पुत्रवर्मपत्री धान गजयभा रुची यकं ॥ व
क्रस्यैव्यालंते कारं नृपूनादि विरुचिती ॥ अष्टशृङ्ग
पाणानि विरुचदां हं कर्म ॥ विष्णुत्वा ॥ टिप्पणा ॥ रास
कर्म धातु मह विरुचिती ॥ अष्ट विष्णुत्वा ॥ दातां निरसापृ
ष्टया इत्यौ ॥ वा नि वासन रुत्वा ॥ नृत्वा ॥ लूक ववा कृतं
॥ रुत्वा ॥ त विष्णुत्वा ॥ नि किं लाच वसं कृतं ॥ अष्टान

बमहागोड आगिनी गल मालुतं॥ नृत्य मालमहा दर्वला
काती हेतको वकं॥ नमामि श्रीमहा कालं॥ नववदुवन
नव॥ य३ य० लुलूया हा वि० लुला क विता ल नी स व
सिद्धि मवा प्राति सदा विजय व ड न॥ तिष्ठान युवा
नमः॥ ॥ नन ४ श्री दक्षिण कालिका ये॥ ॥ कवा सब
दने श्री मूक कभी उडु डु जा॥ कालि का दक्षिणी दि

या मूळ माला विरु चिता॥ सद्यस्मिन्न निव ४ स्वप्न वाभा
१ धा ध कवा न्यूजा॥ मूरु ये व नद वेव दक्षि॥ ॥ श्री दुवा
लिका॥ महा मंघ प्रहा न्नामी त॥ ये व व दिग न्ववा॥ क० ४
व सक मूला गल डू धि व व रिता॥ क० विरं मताली
क० व य म रु मान को॥ धा न द डी कवा ला ह्या योता न
द य या ध री॥ मवा नी क व संघा ते० क० का ची ह स मूखा

हृदयगलदकंधावाविलुविमानना॥ धावनूया
महाबोडी॥ मन्त्रनयवाहिनी॥ दलुवांदकिष्वा
विमलकालनिक्थार्या॥ धावनूयमहादवद्वयव
मिसेहिता॥ निवाहिः धाववावाहि॥ शुद्धिद्विक्थमन्त्रि
ता॥ महाकालनयममयनिविह्वनताडना॥ नूरवपत
ननयना॥ धावतनसुवावृहो॥ धागिनीचक्रसहितोका

लिफांरावयसदा॥ एवमविक्थयद्विष्मन्त्रानालयवा
हिनी॥ धादकिष्वाकालिकोयधानयूर्यनमः॥ ॥ तमाः
कर्मपूजातस्तानकाकाडाडोपवरीज्जावाहन॥ ॥ एहि
एवहिहृगवमीदकिष्वाकालिकमन्त्रपाइकामा
नूरुपूजापूजापनंज्जगच्छ॥ ॥ धाअखडाकामैवायू
पिकायाडाधीयवमन्त्रनीज्जावाहनयाये॥ धव२मूलम

कुवाकाडा। श्रीदक्षिणकालिकादद्याः ॥ ॐ हाग सु २ ॐ
हति २ ॐ हसंति भान २ ॐ हसंति ता रु व २ अवास्तु
तं कुरु २ मम पूजा गृहांत कुरु २ गु ॥ धन्या मती कुरु
भाति मदी दर्म धन ॥ को अजा प्र को अत्र लव ल व सहात
॥ श्रीदक्षिणकालिकादद्याः ॥ प्राण ॐ हृषाणा ॥ ॥ जीव
ॐ ह हित ॥ ॥ श्रीदक्षिणकालिकादद्याः ॥ सर्व दिवा

निवाद्य न व २ ॥ (प्रपु प्रा व प्राण जि का व व ता नि ॐ
हाग ॥ ॐ स्व वि व ति रु रु सा हा ॥ ॥ स्व हि या द ध व २ ता
म र्म यू क न प्रा व प्र ति का या थ ॥ ॥ स्व हि या न ॥ क व अ ग
ता म या थ ॥ ॥ स्व हि या द या य न थ ॥ ॥ स्व हि या न अ र्ध
त थ ॥ ॥ स्व हि या न अ व म न त थ ३ ॥ ॥ स्ना न ॥ पु का र
अ लि स्ना न ॥ श्री स्व पु व द न ॥ हि दू न ॥ वी न ॥ श्री क

त। इष्टा कृत सतायुक्तं॥ वक्र अलंकार युक्तं न मठता
नायुक्तं सगंधानि व्यादि॥ ॥ धृव दीप नैव म॥ रुल
पक्षाध॥ नरक पुष्टि काय॥ ॥ मूल न पिशा जलिया थ
॥ सति सह यन न वि यना रुत न स पिश॥ अतः क्रीड
हि सनातन पविद्या ना र्चना भूत॥ आर्या २ भाग॥ ॥
विद व जानिनी पूजा बलि॥ ॥ पाद का निर्य मिया

अलि षष्ठ म पूजा बलि॥ ॥ पश्चिम द सुलिया य॥ ॥
उय वलु॥ तिडिल की॥ कालि॥ कलं यनी॥ सूर्य॥ पिशा
कालि षष्ठ म॥ बलि॥ ॥ श्री महा कल पूजा ॥ ॐ
अतितांग हे नवा य नमः॥ ॐ का नू नू हे नवा य २४॥ ॐ
जा वलु हे नवा य २४॥ ॐ जा का र हे नवा य २४॥ ॐ जा
उत्तर हे नवा य २४॥ ॐ जा का र हे नवा य २४॥ ॐ जा
कया नील

ही मल र व वा य २४ ॥ उ जा नी हा न रे व वा य न म ४ ॥ बलि
॥ ॥ ह दु का दि ॥ उ जा ह दु क के व वा ला य न म ४ ॥ उ जा
जि पू ना त क के व वा ला य २४ ॥ उ जा अ नि व ता ल क
व वा ला य २४ ॥ उ जा अ नि जि का क व वा ला य २४ ॥ उ
का ला के क व वा ला य २४ ॥ उ जा क वा ली न क व वा ला
य २४ ॥ उ जा ए क वा द क व वा ला य २४ ॥ उ का री म

दू प क व वा ला य २४ ॥ उ जा हा ट क क व वा ला य २४
॥ उ जा अ च न क व वा ला य २४ ॥ उ जा मा म न क व वा
ला य २४ ॥ उ जा कू र्म पृ ष्ठ क व वा ला य न म ४ ॥ बलि
॥ ॥ प्र या ग म दि ॥ उ जा प्र या ग क व वा ला य न म ४ ॥ उ जा
व न र क क ॥ उ जा का ला पू न क ॥ उ जा अ द हा स क ॥
उ जा अ य ति क ॥ उ जा व रि ण क ॥ उ जा ए क अ क क

यं ॥ ॥ का हृदया जनमः ॥ ॐ ह्यादि षडं (ग न पूजनं
वलि ॥ आवाहनं नमः ॥ यत्नं नो कृतं पूज्यं नमः ॥ ॥
(धनं धानि कोशं विड्मूढां दर्शयन्त ॥ ॥ उषि कोना
दिदं दत्ता त्या या इको पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ वलि
॥ ॥ हू को या नाला वा को न हा कालं वयं सर्वविघ्ना
नामय २ को प्री हृदं ह्या हा ॥ प्रियं जलि वलि ॥

ॐ कालो पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ॐ सकल पूत
ॐ कया लिन्य पूत ॥ ॐ हलाथ पूत ॥ ॐ मी पूजा व
लि गृह २ ह्या हा ॥ प्रथमा वनर्षी ॥ ॥ तता द्वितीया वनर्षी
ॐ कल कलाथ पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ॐ विप्र
विना धिन्य पूत ॥ ॐ विप्रविलाथ पूत ॥ ॐ दं वलि
गृह २ ह्या हा ॥ ॐ त्रिद्वितीया वनर्षी ॥ ॥ ततः ४ तृतीया

वनली॥ ॐ उग्रायै पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ दीर्घ
ये पूत॥ ॐ उग्रहाग्रायै पूत॥ ॐ तिष्ठतीयावनली॥
॥ अथ कुरुथ विनती॥ ॐ नीलायै पूजयामि तर्पयामि
मिनमः॥ ॐ घण्टायै पूत॥ ॐ बलायै पूत॥ वलिगृह
स्वाहा॥ ॐ तिष्ठथ विनती॥ ॥ ततो ये च मा वृषम
ॐ मोक्षायै पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ मूढायै पू

त॥ ॐ मित्रायै पूत॥ वलिगृहस्वाहा॥ ॐ तिष्ठथ मा
धनली॥ ॐ विकालायै च स्वाहा॥ ॥ ततो वलिगृहस्वाहा॥
जर्वक॥ स्वर्गावलिदिय॥ ॐ प्रकाशायै स्वाहा॥
पूजयामि तर्पयामि नमः॥ ॐ नागायै पात॥ ॐ ना
हृग्ययै पात॥ ॐ वामायै पात॥ ॐ कोसा
यै पात॥ ॐ अयमाजिमायै पात॥ ॐ वामाजि

ॐ ह्रदयाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ कु निखाय वीर्य
क कवयाय नमः ॥ को न कवयाय नमः ॥ कु न कवयाय नमः ॥
॥ च तत्वा न त न आ वा ह ना दि ॥ ॥ सा मी य ॥
नि बलि कृ य ॥ बलि वि य मो न स न य क न ॥ का को क
क ज पा ला य वा इ का पू ज या मि ॥ ॐ दं व लि गृ ह्ण २ स्वा
हा ॥ श्री जी क ल पू ज व द् के ना थाय वा इ का ॥ ॐ दं व लि

गृ ह्ण स्वा हा ॥ ग म गी गू ग ॥ ॐ श्री क ल ग ल श्व रा य वा इ का
पू ज या मि ॥ ॐ दं व लि गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ ॥ मूल व लि ॥ को को
को ह्र ह्र जी जी द कि ल का ला य नु हि त द व द वि ल्या उ
का नू क ला व लि गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ ॥ जे ह व ला द व ला स
य ला द वी स ॥ द कि ल का ला दि स न ल य वि वा व यः सा
यू धे ला स्वा हा ना य ॥ ॐ मी पू जा व लि गृ ह्ण २ स्वा हा ॥ ॥

दशक ॥ ॥ आप या अं ॥ का सा दा ॥ १० ॥ श्री जी स्वाहा ॥
१० ॥ श्री स्वाहा १० ॥ श्री स्वाहा १० ॥ ॥ धव निरय या कथं ज
य या अं ॥ ॥ १० ॥ ॥ जय मालीयाम ॥ ॥ श्री माल २
॥ किं स्व दू यिती मा सु मा मं सि डि दारु व ॥ माला का य
॥ माला पूजा ॥ ॥ श्री जू क मालि का य नमः ॥ ॥ श्री सि द्ध
॥ नमः ॥ ॥ हूँ ति जय माला पूजा ॥ ॥ नवा क न
॥ १०८ ॥ निवा ॥ ॥ ॥ ॥ शुक्रा नि तु क (ग) श्री हं

दशक ॥ ॥ आप या अं ॥ का सा दा ॥ १० ॥ श्री जी स्वाहा ॥
१० ॥ श्री स्वाहा १० ॥ श्री स्वाहा १० ॥ ॥ धव निरय या कथं ज
य या अं ॥ ॥ १० ॥ ॥ जय मालीयाम ॥ ॥ श्री माल २
॥ किं स्व दू यिती मा सु मा मं सि डि दारु व ॥ माला का य
॥ माला पूजा ॥ ॥ श्री जू क मालि का य नमः ॥ ॥ श्री सि द्ध
॥ नमः ॥ ॥ हूँ ति जय माला पूजा ॥ ॥ नवा क न
॥ १०८ ॥ निवा ॥ ॥ ॥ ॥ शुक्रा नि तु क (ग) श्री हं

हरवधूमहासिद्धिनिवहाः॥ ॥ कुरंग की वृत्त
गमनसुखतिष्ठमननलं वंश कस्य कापीपतिरू
वप्रतिनिधिः॥ विपूः कालगानकलयतिच
तर्कलिकलया विनंजीवसूक्तः परवतिशूर
कषपतिजनिः॥ ॥ पापाहं पापकसाहिपापाः
सायायसकृवाहिनी कालिकदविमर्षपापर

नाहनः॥ अन्तरंगनलीनालियादि॥ ॥ यानिमूडा
काकाजापनमग्वनीसूलाकपूर्यकामनालादय
यः॥ ॥ अथतर्पणी॥ जीवातय नासनसूक्तकमगह
न (गाहववीमकुमूर्तिः बड़ीबड़ीसना (थोदिनिवि
दिनिनतालाकयालाहमिडा॥ वकाजकासिनका
पिहगलसहितामातनाकपयाला जगिपापाग

यूक्ता। जल वस्त्र खं च वा यान म म त सि व रु ॥ यि व रु द व ता
स र्व स रूपा य वि ता य का ॥ या नि नी क र या ला य म
म र्व ह य व सि ता ॥ ॥ द वी क्क षा ध ना या य ॥ रु वू र्व
नि वः त्वं म किः त्वं त्व म व त्व म वा सि मा ता त्व म वा सि
पि ता ॥ त्व म वा सि वि या त्व म वा सि वू दि ग ति नू म ति
ः त्वं त्व म का लि का लि का ॥ ॥ ए का नं का ॥ ॥ यू पि पू

जा ॥ इ तु पू जा ॥ इ तु स्था य ॥ ॥ नि व स म त वि य ॥
स म य का य ॥ अ न्ति म य ॥ ॥ ध कि नि त य ॥ वि रु षा
य ॥ आ र्धु का या य ॥ आ र्धु दू य ॥ सि स्था ग ल वा क का
या ॥ द वी क्क का य ॥ हि स ली रु या त य ॥ गु त य ॥ अ यी
३ की ना नी रु जा पि थू स य ॥ ॥ ॥ ऊ ल वा रु अ य य
ह त गु वि आ स पू जा त्वं या य ॥ ॥ मा लि ती य ॥ १० त् ॥

मंयवलि विधाय ॥ संवर्तु आवाहमादि ॥ विदं व
आगिनी ॥ वलि ॥ आवाह ॥ मृडा ॥ ॥ आसन धा
न ॥ पणियाजलि ३ ॥ ॥ या इकांति स्य पियाजलि
कुजासं वलि ॥ श्री ३ कोमानी मूलमकुं न विधा ३
मृदु मृ ५ वलि ॥ सा मया वलि ॥ निवर्तितो य वलि
लो कमहा वलित नयूनक ॥ आवाह ॥ धनू याति

रुमाकि मृडा ॥ तथ्यल ॥ धृया दीया न वय क्वाथ
जाय साकु धुंका ॥ श्रीतपंगा ॥ एकानंक ॥ ॥ इयुया
सुवृकन श्वात कायकल मृथा ॥ ॥ कोमानी कुजा
स क्वाथ ॥ ॥ समंय विधाय ॥ यजमान स्य महा नवमी
या वलि श्री ३ कोमानी याग न न पूजा नितिरुप
न यथा सा कु कपु रु क्त व न दा यि म्मा रु क्तु ॥ ॥

मा
यजती आदि न स कस्यै त कस्यै माथ ॥ ॥ खो वि कि
धन का आता स कस्यै त विथ ॥ ॥ को मा नी वि स ऊ न
स र्ध न म ल मा ग ल्प नि व श र्थ र्थ सा धि का स न (अथ
स्य क (नी नी ता वा य वि न मा धु ता ॥ श्री ३ को मो नी द व
ख का त वा ता रु व रु ॥ थ व थ य यी ० स का थ ॥ ॥
य व द वी स क ल वि स ऊ न या का उ ॥ क क न ऊ ज
म

मा न था क व न त ॥ ॥ सि ध र्थ ॥ ऊ ज मा नी का थ ॥
द व आ दि य ज मा त आ दि अ रि क क ॥ ॥ य ज न स
म हा द द मा वा र्ध थ ॥ ऊ ज रि क क स र्ध र्थ का रु ॥ उ
धी र्य उ च द न ॥ वी न र्थ नी ॥ जी ला क मा न ती य ॥
सि ध र्थ यदि ॥ ॥ ता ता पू र्ण ॥ ॥ उ क न क ॥ अ न्ध
पूर्व ॥ ॥ य ज मा त य ज मा ती उ रि न ॥ व रु खान दि

सप्तमहाविष्णुद्वय

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ कुरुया गिती काय ॥ १ ॥ श्रीतथा ता ऊजसा
नरुणी उखक दवता यामहादगी ती या र्वन्ध कृतक
मुपथ चक्र तित्ति ल्य (थनि ॥ महादगी ती या र्वन्ध द्वि
तीय चक्र तित्ति ल्य (थनि ॥ महादगी ती या र्वन्ध हती
अचक्र तित्ति ल्य (थनि ॥ जयस्त्रिका महादगी ती या
र्वन्ध हती य वल्लूक मुपथ चक्र संपूर्ण तित्ति ल्य (थनि यऊ

मानस्य सप्तमं पात्रं वा नां आयूषात्रा मन्त्रे स्वर्गज न धन
 तं श्री सक्तं तं सक्तानं वृद्धिं वृद्धं यथा भाग्यं श्री कृष्णं हस्त
 वनं दायित्री श्री लवन्तु ॥ ॥ दीनं राजनं याय ॥
 वलि (धायं कं लं वि काय ॥ ३ ॥ श्री ज्ञा तं तत्वा यथा हा
 ३ ॥ ॥ जू र्धया ज स वा दत्वा न वलि स तं या श्री कृष्णं
 काय रुद्र ३ ॥ ला पा धाय श्री कृष्णं वलि धाय श्री कृष्णं